प्रतिवेदन

दिनांक 12.01.19

"गांधी जी का अहिंसा का विचार'

राजनांदगांव. शासकीय कमलादेवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग. के राजनीति विज्ञान विभाग में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती समारोह के परिप्रेक्ष्य में राजनीति विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष सुश्री आबेदा बेगम सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान ने गांधी जी के अहिंसा के विचार पर एक घंटे की विशेष कक्षा ली। अपने व्याख्यान में विभागाध्यक्ष आबेदा बेगम ने बताया कि अहिंसा का मतलब है हिंसा या कत्ल न करना। याने किसी को भी लोभवश तकलीफ देना हिंसा है। बुरा विचार, झूठा भाषण, जलन, किसी का बुरा करना हिंसा है।

अहिंसा के रूप इसके 2 रूप है

नकारात्मक अहिंसा :– किसी को क्रोध, जलन के कारण उसे नुकसान नहीं पहुंचाना अहिंसा है।

सकारात्मक अहिंसा :– प्यार, धीरज, अन्याय का विरोध करना सकारात्मक अहिंसा है।

अहिंसा की अवस्थाएं :–

1. जागृत अहिंसा :– यह वीर पुरूषों की अहिंसा है, ये अहिंसा को भार नहीं समझते, ताकतवर लोग इसे अपनाते हैं। उनके पास शक्ति होती है पर वे उसका थोडा भी प्रयोग नहीं करते।
2. औचित्यपूर्ण अहिंसा :– यह वह अहिंसा है जो आवश्यकता पड़ने पर औचित्यानुसार अपनाई जाती है। इसका पालन ईमानदारी सच्चाई और दृढ़ता से किया जाना चाहिए।
3. कायरो की अहिंसा :– यदि कायरता और हिंसा में किसी एक का चुना करना है तो गांधी जी हिंसा को स्वीकार करते है।

अहिंसा की श्रेष्ठता :–

1. आत्मिक शक्ति
2. स्वतः क्रियाशील
3. स्थायी प्रभाव

अहिंसा की विशेषताएं :–

1. अहिंसा की परम्परागत परिभाषा में परिवर्तन
2. अहिंसा के कार्यक्षेत्र का विस्तार :– "अहिंसा सबके लिये है सब जगहों के लिये है सब समय के लिये है।

अहिंसा की धारणा की व्यवहारिकता :–

1. हिंसा संकटकालीन कर्तव्य कहीं जाती है। यदि जंगल में शेर, चीते या सड़क पर निकलते पागल कुत्ते आदि जीवन को समाप्त करने के लिये हमला कर दे तो उनका वध हिंसा की श्रेणी में नहीं आता है।
2. शरणागत की रक्षा हिंसा नहीं है :– स्त्रियों और बच्चों पर किया गया जुल्म गलत है।
3. हिंसा अपराध नहीं – उदाहरण यदि किसी का रोग असाध्य हो जाये तो उसे मारना हिंसा नहीं।

गांधी जी ने अपने आश्रम में तड़पते, मरणासन्न बछड़े को कष्ट मुक्त करने के लिये जहर देने की अनुमति दी थी। यह हिंसा जरूर है पर क्षम्य है क्योंकि इसमें बेहद दया, दुख, कातरता का भाव है।

निष्कर्ष :–

गांधी जी ने बताया कि "कठोरतम धातु भी पर्याप्त ताप के आगे पिघल जाता है। इस प्रकार कठोर से कठोर हृदय भी अहिंसा के पर्याप्त ताप के आगे द्रवित हो जाता है।"

अहिंसा वह बंधन है जो समाज को एक सूत्र में पिरोता है।

ABegum

विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान
(सुश्री आबेदा बेगम)
शास. कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, राजनांदगांव

प्राचार्य
शास. कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती समारोह
वर्ष 2018 -19 -20